आद करके अबलों, परदा न खोल्या किन।
सो बरकत मेंहेदी महंमद, खुल जासी सब जन।।५९ ।।

शुरू से आज तक इस भेद को किसी ने नहीं खोला। मेंहदी मुहम्मद की कृपा से यह सब भेद सभी को खुल जाएंगे।

लोक जाने ज्यों और है, ए भी फुरमान तिन रीत।
पर दिल के अंधे न समझहीं, ए फुरमान सब्दातीत।। ६० ।।

संसार वाले जानते हैं कि यह कुरान भी दूसरे धर्म ग्रन्थों की तरह है, परन्तु यह दिल के अन्धे नहीं समझते कि इस कुरान के अन्दर पार का ज्ञान है।

ए कागद नहीं फरेब का, और कागद सब छल।
अबहीं इमाम देखावहीं, रसूल किताब का बल।। ६१ ।।

दुनियां के सारे धर्म ग्रन्थ माया के अन्दर के हैं और यह कुरान ग्रन्थ माया के बाहर का है। माया का नहीं है। अब इमाम मेंहदी साहब आ गए हैं और वह रसूल के कुरान की शक्ति को दिखाएंगे।

॥ प्रकरण ॥ २० ॥ चौपाई ॥ ५६५ ॥

सनन्ध–मुस्लिम की रेहेनी

सुनियो अब मोमिनों, ए केहेती हों सब तुम।
जब तोड़ी आइयां नहीं, इमाम के कदम।। १ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं, हे मोमिनो! अब सुनना, यह सब तब तक तुमको ही कह रही हूं, जब तक तुम इमाम साहब के कदमों में नहीं आ जाते।

मैं चाहों मोमिन को, हम तुम एकै अंग।
मैं तबहीं सुख पाऊंगी, मेंहेदी महंमद मोमिन संग।। २ ।।

हे मोमिनो! मैं तुमको चाहती हूं क्योंकि हम तुम एक ही अंग हैं। मुझे तभी सुख होगा जब मोमिन, मुहम्मद और मेंहदी तीनों इकट्ठे हो जाएंगे।

आए ईसा मेंहेदी महंमद, मोमिन आवसी कदम।
हनोज लों कबूं न हुई, सो होसी नई रसम।। ३ ।।

मुहम्मद, ईसा, मेंहदी (बसरी, मलकी, हकी) आ गए हैं। अब मोमिन इनके चरणों में आएंगे। आज तक जो लीला नहीं हुई, वह नई लीला अब होगी।

बड़ा मेला इत होएसी, आए खुद खसम।
बखत भला साहेब दिया, भाग बड़े हैं तुम।। ४ ।।

खुदा खुद आया है। यहां पर बहुत बड़ा मेला होगा। हे मोमिनो! तुम्हारे बड़े नसीब हैं कि यह मौका तुमको मिला है।

नेक कहूं राह मुस्लिम की, जो देखाई रसूलें मेहेर कर।
भूले अवसर पछताइए, सो कहूं सुनो दिल धर।। ५ ।।

जो रसूल साहब ने कृपा कर मोमिनों के वास्ते रास्ता बताया है उसकी हकीकत मैं थोड़ी-सी बताती हूं। उसे दिल में बिठा लेना, नहीं तो वक्त चले जाने के बाद पछतावा होगा।

Nijanand App

पेहेले तो सब भूलियां, मैं तो कहूं तुमें हक।
देखो हाथ में नूर खुदाए का, फरेब में हुए गरक।। ६ ।।

मैं तुमको सत्य कहती हूं कि पहले तुम सब भूल गए थे और फरेब में गर्क हो गए थे। इसकी जानकारी तारतम वाणी हाथ में लेकर देखो।

कहे फुरमान इनों हाथ में, मेहेर कर दिया रसूल।
जाहेर तुमको बताइया, सो भी गैयां तुम भूल।। ७ ।।

रसूल साहब ने कृपा करके फुरमान (कुरान) तुम्हारे हाथ में दिया है और तुम्हें जाहिर बतलाया फिर भी तुम भूल गए हो।

जो जाहेर है तुम पे, माएने इन कुरान।
एते दिन न समझे, अब नेक देऊं पेहेचान।। ८ ।।

इस कुरान के माएने जो इतने दिनों से तुम्हारे पास हैं पर तुम जान नहीं सके, इनकी थोड़ी पहचान मैं तुम्हें देती हूं।

फैलाव ऊपर का न करूं, नेक देऊं मगज बताए।
ज्यों वतन की सुध परे, सब पकड़ें इमाम के पाए।। ९ ।।

मैं अधिक जाहिर नहीं करूंगी। उसका थोड़ा-सा रहस्य बताती हूं, जिससे घर की पहचान हो जाए और सब इमाम मेंहदी की शरण में आ जाएं।

ए जो तुमको रसूलें, दिए माएने खोल।
जाहेर किए न ले सके, कहूं सो दो एक बोल।। १० ।।

रसूल साहब ने माएने खोलकर बताए फिर भी तुम न ले सके। उन्होंने जाहिर भी किए, फिर भी तुम नहीं ले सके। दो एक वचन तुमको कहूंगी।

कहो कलमा हक कर, ल्यो माएने कुरान।
पाक दिल रूह पाक दम, या दीन मुसलमान।। ११ ।।

जो कलमें को सच माने, कुरान के माएने समझे, उसका दिल पाक, रूह पाक है, वही सच्चा मुसलमान है।

पांच बखत सल्ली करे, दिल दरदा आन सुभान।
सुने न कान कुफार की, या दीन मुसलमान।। १२ ।।

जो सुभान का दिल में दर्द लेकर पांच बार नमाज पढ़े और फरेब की बातों को नहीं सुने, वही सच्चा मुसलमान है।

कसनी लेवे आप सिर, साफ रोजे रमजान।
रात दिन याही जोस में, या दीन मुसलमान।। १३ ।।

जो कसनी करके रमजान में रोजे रखे और रात-दिन उसी जोश में मग्न रहे, वह दीन का सच्चा मुसलमान है।

माएने ले चीन्हें आपको, करे रसूल पेहेचान।
वतन सुध करे हक की, या दीन मुसलमान।। १४ ।।

जो रसूल की पहचान कर कुरान के माएने लेकर अपने आप की पहचान करे, घर की और खुदा की सुध रखे, वही सच्चा मुसलमान है।

Nijanand App

रसूल आए किन ठौर से, किन वास्ते जिमी हैरान।
ए सुध सारी लेवहीं, या दीन मुसलमान।। १५ ।।

रसूल किस ठिकाने से आए हैं? किन के वास्ते इस संसार में आए हैं? जो यह सब खबर रखे, वही मुसलमान है।

किन भेज्या आया कौन, ल्याया हक का फुरमान।
ए सहूर करके समझहीं, या दीन मुसलमान।। १६ ।।

रसूल को किसने भेजा है, कौन आया है जो हक का फरमान लाया है, यह विचार कर जो समझे, वही सच्चा मुसलमान है।

सारे सबद रसूल के, सिर लेवे हक जान।
नूर नबी के मगन, या दीन मुसलमान।। १७ ।।

रसूल साहब की वाणी को सत जानकर ग्रहण करे और नबी (रसूल साहब) के नूर में मग्न रहे, वही सच्चा मुसलमान है।

कलाम अल्ला कुरान में, दिल दे करे प्रवान।
अंदर आकीन उजले, या दीन मुसलमान।। १८ ।।

अल्लाह की वाणी जो कुरान में है, दिल देकर जो स्वीकार करे, साफ दिल से यकीन रखे, वही सच्चा मुसलमान है।

ए जो कुदरत गफलती, चौदे तबक की जहान।
ए फरेब नीके समझहीं, या दीन मुसलमान।। १९ ।।

यह चौदह तबकों (लोकों) का ब्रह्माण्ड माया के अन्धकार में भूला हुआ है। जो इस फरेब को अच्छी तरह समझे, वही सच्चा मुसलमान है।

ए सब खेल खसम का, बनिआदम हैवान।
एकै नजरों देखहीं, या दीन मुसलमान।। २० ।।

यह सारी दुनियां अल्लाह की बनाई हुई है। आदमी हो या जानवर, जो इनको एक नजर से देखे, वही सच्चा मुसलमान है।

न्यारा रहे सबन थें, ए जो बीच जिमी आसमान।
संग करे खुद दरदी का, या दीन मुसलमान।। २१ ।।

जमीन और आसमान के बीच की दुनियां से अलग रहे और अपने मोमिनों का संग करे, वही सच्चा मुसलमान है।

भली बुरी किनकी नहीं, डरता रहे सुभान।
सोहोबत खूनी की ना करे, या दीन मुसलमान।। २२ ।।

जो किसी की भली-बुरी में न पड़े, पारब्रह्म मालिक से डरता रहे तथा खूनी की सोहोबत (साथ) न करे, वही सच्चे मुसलमान का धर्म है।

यामें कोई न बिराना अपना, ए देखे सब समान।
यासें न्यारे जाने मोमिन, या दीन मुसलमान।। २३ ।।

इस संसार में न कोई अपना है, न बिराना (पराया) है। सबको समान देखे तथा मोमिनों को इनसे अलग समझे वही सच्चा मुसलमान है।

Nijanand App

ए जुदे नीके जानहीं, मोमिन मुस्लिम कुफरान।
पेहेचान जुदी सब रूहों की, या दीन मुसलमान।। २४ ।।

जो अच्छी तरह से जीव सृष्टि, ईश्वरी सृष्टि, ब्रह्म सृष्टि को पहचाने, वही सच्चा मुसलमान है।

मेहेर दिल मोमिन के, इस्क अंग रेहेमान।
दाग न देवे बैठने, या दीन मुसलमान।। २५ ।।

मोमिनों के दिल में मेहर है और यह अपने खुदा के लिए इश्क से भरे हैं। किसी प्रकार का दाग न लगने दे, वही सच्चा मुसलमान है।

जो रूह होवे मुस्लिम, सो संग ना करे कुफरान।
आसिक खुद खसम की, या दीन मुसलमान।। २६ ।।

जो पक्का ईमानदार हो, पक्का यकीन रखता हो और काफिरों का संग न करता हो और अपने खसम (खुदा) का आशिक हो, वही सच्चा मुसलमान है।

जो रूह भूली आप को, मुस्लिम कलमे पेहेचान।
तिनको वतन बतावहीं, या दीन मुसलमान।। २७ ।।

जो भूली हुई आत्माओं को कलमे से यकीन दिलाए और उनको घर की सुध देवे, वही सच्चा मुसलमान है।

साफ रखे सबों अंगों, ज्यों छींट ना लगे गुमान।
बांधे दिल गरीबी सों, या दीन मुसलमान।। २८ ।।

जो अपने अंगों को साफ रखता है अर्थात् अहंकार को कभी नहीं आने देता, दिल में गरीबी बांधकर रखता हो, वही सच्चा मुसलमान है।

रेहेवे निरगुन होए के, और निरगुन खान पान।
नजीक न जाए बदफैल के, या दीन मुसलमान।। २९ ।।

जो निर्गुणी हो (साधारण वेशभूषा में रहता हो) और जिसका खानपान निर्गुणी हो (सात्विक भोजन) और नीच कर्म के नजदीक न जाता हो, वही सच्चा मुसलमान है।

प्यारा नाम खुदाए का, फेरे तसबी लगाए तान।
रात दिन लहे बंदगी, या दीन मुसलमान।। ३० ।।

जो अपने प्यारे अल्लाह के नाम की माला एक चित्त से जपता है, रात-दिन बन्दगी में लगा रहता है, वही सच्चा मुसलमान है।

दरदा ले द्वारे खड़ी, खसम की गलतान।
रूह लगी रसूलसों, या दीन मुसलमान।। ३१ ।।

जिसे अपने खसम का दर्द है और जो उसी की याद में फना है, जिसकी सुरता रसूल में लगी है, वही सच्चा मुसलमान है।

हराम छोड़ हक लेवही, ए जो करी बयान।
आपा रखे आप वस, या दीन मुसलमान।। ३२ ।।

जो हराम को (झूठ को) छोड़कर हक (सच्चा) को लेता है, अपने आप को अपने वश में रखता है और जो कुछ कहा है उस पर अमल करता है, वही सच्चा मुसलमान है।

Nijanand App

साफ दिल ईमान सों, करे बावन मसले अरकान।
ए बिने जाने इसलाम की, या दीन मुसलमान।। ३३ ।।

दिल साफ रखकर ईमान से बावन मसले (शरीयत के नियम) मानता है और इसको इस्ला बुनियाद मानकर चलता है, वही सच्चा मुसलमान है।

मुस्लिम सारे केहेलावहीं, पर ना सुध हकीकत।
ना सुध रसूल ना खसम, ना सुध या गफलत।। ३४ ।।

मुसलमान सारे कहलाते हैं। उन्हें हकीकत के ज्ञान की सुध नहीं है। उन्हें रसूल की, खसम की माया की सुध नहीं है।

जो अंदर झूठी बंदगी, देखलावे बाहेर।
तिनको मुस्लिम जिन कहो, वह ख्वाबी दम जाहेर।। ३५ ।।

जो झूठी बन्दगी कर ऊपर का दिखावा करते हैं, वह मुसलमान नहीं हैं। वह स्वप्न के जीव हैं

तो होए कबूल मुस्लिम, जो पोहोंचे मजल इन।
जोलों होए न हजूर बंदगी, खुले मुसाफ हकीकत बिन।। ३६ ।।

जब तक जिसे कुरान की हकीकत का पता नहीं है तब तक उसकी की गयी बन्दगी हजूरी ब नहीं होती। जो इस मंजिल तक पहुंचे उसे ही खुदा मुसलमान मानता है।

इसलाम बड़ा मरातबा, जो करे अपनी पेहेचान।
जुलमत नूर उलंघ के, पोहोंचे नूर बिलंद मकान।। ३७ ।।

इस्लाम धर्म का इतना बड़ा दर्जा है कि उससे अपनी पहचान होती है। जो निराकार को उलं अक्षर से परे परमधाम में पहुंचता है, वही मुसलमान है।

केहेलाए मुस्लिम पकड़े वजूद, पांउ चले राह ऊपर।
क्यों न कटाए पुलसरातें, जो रसूलें देखाई जाहेर कर।। ३८ ।।

मुसलमान कहलाते हैं मगर वजूद की राह चलते हैं। ऐसे लोग पुलसरात, जो तलवार की धा समान है, उससे कटेंगे। ऐसा रसूल साहब ने जाहिर बताया है।

जिन दिल पर सैतान पातसाह, सो ना पाक बड़ा पलीत।
खूंन करे खिन में कई, दिल पाक होए किन रीत।। ३९ ।।

जिनके दिलों में शैतान की पातसाही (बादशाही) है, वही लोग नापाक और नीच हैं। एक क्ष कई खून करते हैं। ऐसे लोगों के दिल किस तरह पाक होंगे?

दिल पाक जोलों होए नहीं, कहा होए वजूद ऊपर से धोए।
धोए वजूद पाक दिल, कबहूं न हुआ कोए।। ४० ।।

जब तक दिल पाक नहीं होता है, शरीर को ऊपर से धोने से क्या होगा? नहाने से किसी का निर्मल नहीं होता।

पाक हुआ दिल जिनका, तिन वजूद जामा पाक सब।
हिरस हवा सब इंद्रियां, तिन नहीं नापाकी कब।। ४१ ।।

जिनका दिल पाक हो गया है, उनके कपड़े, शरीर, चाहना, इन्द्रियां सब पाक हैं। उनका कुछ न नहीं, सब कुछ पाक है।

Nijanand App

हलाल हलाल सब कोई कहे, पूछो हादी सिरदार।
जिन दिल हुआ अर्स हक का, तिन दुनी करी मुरदार।।४२।।

हम उचित ही करते हैं ऐसा सब कहते हैं, किन्तु अपने हादी जिनके दिल में हक विराजमान हैं और जिन्होंने दुनियां को नाचीज समझ कर छोड़ दिया है, से पूछकर देखो।

दिल अर्स मोमिन कह्या, तित आए हक सुभान।
सो दिल पाक औरों करे, जाए देखो मगज कुरान।।४३।।

मोमिनों के दिल में आप हक सुभान अर्श बनाकर बैठे हैं। वह औरों के दिल को भी पाक साफ करेंगे, ऐसा कुरान में कहा है।

पांउ तो कोई ना भर सक्या, उमेद करी सबन।
सो महंमद मेंहेदी आए के, नीयत पोहोंचाई तिन।।४४।।

उम्मीद में सब बैठे रहे, परन्तु अमल किसी ने नहीं किया। अब यही मुहम्मद मेंहदी ने आकर उनको उनकी रहनी के अनुसार बहिश्त दी।

ए कलमा जिन कानो सुन्या, ताए भी देसी सुख।
तो मुस्लिम का क्या केहेना, जो हक कर केहेवे मुख।।४५।।

जिसने कानो से कलमा सुना है उसको भी सुख मिलेगा। जो यकीन वाले मुसलमान हैं और जिन्होंने कलमे को सच्चा माना है उनका तो कहना ही क्या?

ए कलमा जिन जिमिऐं, किया होए पसार।
तिन जिमी के लोक को, जिन कोई कहो कुफार।।४६।।

यह कलमा (तारतम) जहां-जहां फैला, वहां के लोगों को काफिर मत कहना।

बांग आवाज कानों सुनी, कुफर कहिए क्यों ताए।
सो रूह आखिर कजा समें, औरों भी लेसी बचाए।।४७।।

जिसके कानों में बांग (आरती) की आवाज हुई है, अर्थात् आरती को कानों से सुना हो, उसे काफिर कैसे कहा जाए? ऐसी रूह तो कजा के समय औरों को बचा लेगी।

इन कलमें के सब्द से, सब छूटेगा संसार।
तो कहा कहूं मैं तिनको, जिन पेहेचान कह्या नर नार।।४८।।

इस कलमे (तारतम) के वचनों से सारे संसार को मुक्ति मिलनी है, तो जिसने पहचान कर (तारतम) ग्रहण किया उसकी मैं क्या कहूं?

ए कलमा इन दुनी का, सब दुख करसी दूर।
तिनको भी भिस्त होएसी, जिनके नहीं अंकूर।।४९।।

यह कलमा (तारतम) दुनियां के सब दुःखों को दूर कर देगा। सारे जीवों को जिनके अंकुर (निसबत) भी नहीं हैं उनकी यह बहिश्तें कायम करेगा।

तबक चौदे जो कोई, रूह होसी सकल।
इन कलमें की बरकतें, तिन सुख होसी नेहेचल।।५०।।

चौदह लोकों के बीच में जहां कहीं भी रूहें होंगी, वह इस कलमे (तारतम) की बरकत से अखण्ड सुख प्राप्त करेंगी।

Nijanand App

दीन होए के चलसी, दरदी रसूल रेहेमान।
बोहोत कह्या है रसूलें, ताकी नेक करी है बयान।।५१ ।।

जो खुदा का दर्द गरीबी से लेकर चलेगा उनके वास्ते रसूल साहब ने बहुत कुछ कहा है। मैंने थोड़ा सा यहां इशारा किया है।

ए तो जाहेर की कही, अब गुझ कहूंगी तुम।
जो बयान रसूलें न किए, मोमिन वतन खसम।।५२ ।।

अब तक तुम्हें जाहिर की बातें कही हैं। अब रहस्य की बातें बताती हूं। इसका बयान रसूल साहब ने नहीं किया है। अपने घर और अपने धनी की बातें गुझ हैं। वह अब मैं बताती हूं।

गुझ माएने कौन लेवहीं, जो जाहेर लिए न जाए।
ए सब खोले रसूलें, जो मैं दिए बताए।।५३ ।।

जब जाहिरी बातों पर ही नहीं चला जाता, तो रहस्य वाली (गुझ) बातों पर कौन अमल करेगा, यह रसूल साहब ने लिखा है और मैंने तुमको बताया है।

कोई जाहेर न ले सके, तो गुझ होसी किन पर।
हम जो लिए जाहेर, नेक ए भी सुनो खबर।।५४ ।।

जो जाहिरी अर्थ नहीं समझ सका वह गुझ रहस्य के अर्थ कैसे समझेगा? हमने जो जाहिरी अर्थ लिए हैं उनकी भी थोड़ी पहचान सुनो।

।। प्रकरण ।। २१ ।। चौपाई ।। ६१९ ।।

सनन्ध–अर्स अरवाहों के लछन

गुझ तो तुमको कहूंगी, सक न राखूं किन।
पर पेहेले कहूं नेक मोमिनों, जो हमारा चलन।।१ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि रहस्य की बातें तो तुमको कहूंगी और तुम्हारे संशय भी मिटाऊंगी, परन्तु पहले मोमिनों की बात करती हूं जो हमारी रहनी हैं।

बयान किए जो रसूलें, हम सोई लिए जाहेर।
लाख बेर कह्या रसूलें, जन जनसों लर लर।।२ ।।

रसूल साहब ने जो कुरान में कहा है उसे हमने जाहिरी (बाह्य अर्थ) में ग्रहण किया। रसूल साहब ने लोगों को लाखों बार लड़-लड़कर कहा।

कोट बेर जाहेर सबों, रसूलें फुरमाया जेह।
सो कलमा सिर लेए के, पांउ भरे हम एह।।३ ।।

रसूल साहब ने जो करोड़ों बार फरमाया था, उस कलमे को सिर पर धारण करके हमने अपनी रहनी बनाई।

बड़ा जाहेर ए माएना, कहे हक पें ल्याया फुरमान।
इन कलमे की दोस्ती, कह्या मिलसी रेहेमान।।४ ।।

रसूल साहब ने कहा कि यह कलमा (तारतम) बहुत बड़ी बात है। खुदा ने फरमान देकर मुझे भेजा है। इस कलमे (तारतम) को धारण करने से ही रहमान (धनी) मिलेंगे।

Nijanand App